उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय पाँच

भविष्यवाणी का ऐतिहासिक विश्लेषण

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:24) 5

II. आरंभिक राजतंत्र (1:41) 5

A. मुख्य घटनाएं (2:27) 5

1. संयुक्त राज्य (2:32) 5

2. विभाजित राज्य (3:18) 6

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (4:33) 6

1. वाचायी आदर्श (5:13) 6

2. विभाजित राज्य (5:48) 7

III. असीरियाई तबाही (6:42) 7

A. मुख्य घटनाएं (7:54) 7

1. सीरियाई-इस्राएली गठबंधन (8:15) 7

2. सामरिया का पतन (9:35) 8

3. सन्हेरिब आक्रमण (10:18) 9

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (11:35) 9

1. योना (12:12) 9

2. होशे (13:07) 10

3. अमोस (14:35) 10

4. मीका (15:51) 11

5. नहूम (17:10) 11

6. यशायाह (18:50) 12

IV. बेबीलोनी तबाही (20:27) 12

A. मुख्य घटनाएं (22:05) 13

1. पहला आक्रमण (22:25) 13

2. दूसरा आक्रमण (22:53) 13

3. तीसरा आक्रमण (23:18) 13

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (24:00) 13

1. यिर्मयाह (24:28) 14

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सपन्याह (25:50) 14
3. योएल (26:59) 15
4. ओबद्याह (28:17) 15
5. हबक्कूक (29:14) 16
6. यहेजकेल (30:30) 16
7. दानिय्येल (31:34) 17

V. पुनर्वास का समय (33:32) 17

A. मुख्य घटनाएँ (34:16) 18
1. इस्राएलियों का अपनी भूमि पर लौट आना (34:23) 18
2. मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाना (35:06) 18
3. व्यापक धर्मपरित्याग (35:43) 19

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (36:31) 19
1. हाग्गै (36:46) 19
2. जकर्याह (37:57) 20
3. मलाकी (39:17) 20

VI. निष्कर्ष (40:48) 21

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 22

उपयोग के प्रश्न 26

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:24)

II. आरंभिक राजतंत्र (1:41)

जब इस्राएल में राजतंत्र का उदय हुआ तो भविष्यवाणी का प्रचलन भी बढ़ गया।

दाऊद का राज्य :

- 1000 ई. पू. में स्थापित हुआ
- कई पीढियों तक बना रहा

A. मुख्य घटनाएं (2:27)

1. संयुक्त राज्य (2:32)

दाऊद के कार्य :

- सारे गोत्रों को एकत्र किया
- सुरक्षित सीमाओं की स्थापना की
- परमेश्वर का संदूक यरूशलेम में लेकर आया
- अपने पुत्र द्वारा परमेश्वर के मंदिर के निर्माण की तैयारी की

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. विभाजित राज्य (3:18)

सुलेमान और उसके पुत्र रहूबियाम ने उत्तरी गोत्रों के साथ उस आदर के साथ व्यवहार नहीं किया जिसके वे योग्य थे।

उत्तर के सारे गोत्र अलग हो गए और लगभग 930 ई.पू. में अपना अलग राष्ट्र बना लिया।

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (4:33)

सोलह अलग-अलग भविष्यवक्ता हैं जिनकी सेवाओं को पुराने नियम की बड़ी और छोटी भविष्यवाणिय पुस्तकों में सारगर्भित किया गया है।

- इनमें से कोई भी पुस्तक आरंभिक राजतंत्र के समय की नहीं है

- आरंभिक राजतंत्र ने लिखनेवाले भविष्यवक्ताओं को पृष्ठभूमि दी।

1. वाचायी आदर्श (5:13)

बाद में लिखने वाले भविष्यवक्ताओं ने संयुक्त राजतंत्र को महत्वपूर्ण राजकीय वाचायी आदर्श स्थापित करने वाले के रूप में देखा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. विभाजित राज्य (5:48)

लिखने वाले भविष्यवक्ता दो भिन्न राष्ट्रों में सेवा करते थे :

- इस्राएल का उत्तरी राज्य (राजधानी : सामरिया)
- यहूदा का दक्षिणी राज्य (राजधानी : यरूशलेम)

III. असीरियाई तबाही (6:42)

पहली बार परमेश्वर ने अपने लोगों के विरुद्ध युद्धों को खड़ा किया। 734 से 701 ई.पू. में असीरियाई साम्राज्य के माध्यम से युद्ध में उनकी हार हुई।

A. मुख्य घटनाएं (7:54)

1. सीरियाई-इस्राएली गठबंधन (8:15)

असीरियाई प्रभाव के अधीन तीन छोटे देशों के बीच संघर्ष :

- सीरिया
- इस्राएल
- यहूदा

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

734 ई. पू. के आसपास

- सीरिया और उत्तरी इस्राएल असीरियाई साम्राज्य को कर देते-देते थक गए।
- उन्होंने असीरिया को रोकने के लिए गठबंधन करने का निश्चय किया।
- असीरियाई अपने साम्राज्य के दूसरे भागों में समस्या का अनुभव कर रहे थे।

उत्तर (इस्राएल) और दक्षिण (यहूदा) दोनों असीरिया के साथ मतभेद के पथ पर थे।

यहूदा ने असीरीया का साथ दिया।

2. सामरिया का पतन (9:35)

सामरिया (इस्राएल की राजधानी) सीरियाई-इस्राएली गठबंधन के कारण असीरियाई प्रतिशोध का पात्र बन गया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. सन्हेरिब आक्रमण (10:18)

यहूदा ने असीरिया के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, जिससे उस पर कई आक्रमण हुए। सबसे घातक 701 ई.पू. के आसपास सन्हेरिब का आक्रमण था।

यहूदा का राजा हिजकिय्याह यहोवा की ओर मुड़ा और चमत्कारिक रूप से बचा लिया गया।

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (11:35)

1. योना (12:12)

समय : लगभग 793-753 ई.पू. में उत्तरी इस्राएल के राजा यारोबाम 2 के शासन में।

स्थान : असीरिया में निनवे

संदेश : निनवे का विनाश

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. होशे (13:07)

समय :

- यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में।
- 750 ई.पू. के आसपास से 722 ई.पू. में सामरिया के पतन के समय तक।

स्थान : इस्राएल (उत्तरी राज्य)

संदेश : असीरिया द्वारा इस्राएल का विनाश

3. अमोस (14:35)

समय : सीरियाई-इस्राएली गठबंधन से पहले,760 से 750 ई.पू. के लगभग जब उज्जियाह यहूदा का राजा था और यारोबाम इस्राएल का राजा था।

स्थान : इस्राएल (उत्तरी राज्य)

संदेश :

- असीरिया की ओर से तबाही
- सामरिया का पतन हो जाएगा
- बंधुआई में ले जाया जाएगा

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. मीका (15:51)

समय :

- यहूदा के राजाओं योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में।
- कम से कम 735 से 701 ई.पू. तक।

स्थान : यहूदा; विशेषकर यरूशलेम के क्षेत्र में।

संदेश :

- यदि पश्चाताप नहीं किया जाता है तो यरूशलेम का विनाश होगा।
- यदि बंधुआई होती है तो भी एक दिन परमेश्वर :
    - उसके शत्रुओं से बदला लेगा
    - अपने लोगों को छुड़ा लेगा
    - एक महान् राजा को लाएगा :
        - लोगों को पुनः एकत्रित करने के लिए
        - उस भूमि पर उनकी वाचायी आशीषों को पुनर्स्थापित करने के लिए

5. नहूम (17:10)

समय : 663 ई.पू. से 612 ई.पू. के बीच

स्थान : यहूदा

संदेश : असीरियाई राजधानी निनवे का विनाश

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

6. यशायाह (18:50)

समय :

- यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के शासन में।
- 740 ई.पू. से 701 ई.पू. के कुछ समय बाद सन्हेरिब आक्रमण तक।

स्थान : यहूदा, विशेषकर यरूशलेम

संदेश :

- यहूदा को असीरियाई तबाही का सामना करने के लिए यहोवा पर भरोसा करना जरूरी है।
- यहूदा बंधुआई में जाएगा।
- यहूदा का पुनर्वास बंधुआई के बाद होगा।

IV. बेबीलोनी तबाही (20:27)

तबाही का यह समय 605 ई.पू. से 539 ई.पू. तक का था। भविष्यवक्ता यशायाह असीरियाई तबाही और बेबीलोनी तबाही के बीच एक धूरी की रचना करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. मुख्य घटनाएं (22:05)

1. पहला आक्रमण (22:25)

राजा यहोयाकीम अपने बेबीलोनी सुज़रेन, नबूकदनेस्सर के प्रति अविश्वासयोग्य था। नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया और यरूशलेम से कई अगुवों को निकाल दिया।

2. दूसरा आक्रमण (22:53)

नबूकदनेस्सर ने यहूदा में लगातार हो रहे विद्रोह का जवाब एक और आक्रमण और निर्वासन के द्वारा दिया।

3. तीसरा आक्रमण (23:18)

बेबीलोनियों ने यरूशलेम और उसके पवित्र मंदिर को पूरी तरह से नाश कर दिया।

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (24:00)

इस समय में सात भविष्यवकताओं ने यहोवा के दूतों के रूप में सेवा की।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. यिर्मयाह (24:28)

समय :

- तीनों आक्रमणों और निर्वासनों के दौरान
- कम से कम 626 ई.पू. से 586 ई.पू. के कुछ समय बाद तक

स्थान : यहूदा

संदेश :

- सच्चा पश्चाताप आक्रमणों को रोक सकता है।
- यरूशलेम का विनाश निश्चित है; पश्चाताप करो और कठिनाई के वर्षों के लिए तैयार रहो।
- भविष्य में किसी एक दिन इस्राएल का पुनर्वास होगा।

2. सपन्याह (25:50)

समय : आमोन के पुत्र, यहूदा के राजा योशिय्याह के शासन में।

स्थान : यहूदा

संदेश :

- प्रभु का दिन असीरिया और अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध आ रहा है जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया था।
- यहूदा समेत सारे क्षेत्र पर बेबीलोन का राज्य स्थापित होने की भविष्यवाणी की।
- इस्राएल और यहूदा का पुनर्वास होगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. योएल (26:59)

समय :

- 586 ई. पू. में यरूशलेम के पतन से पहले।
- शायद यहूदियों के बेबीलोन में निर्वासन के दौरान।

स्थान : यहूदा

संदेश :

- यहूदा राष्ट्र विदेशी सेनाओं के द्वारा नाश कर दिया जाएगा।
- सच्चा पश्चाताप बेबीलोन से आने वाली तबाही को रोक या कम कर सकता है।
- जब बंधुआई समाप्त हो जाएगी तो परमेश्वर अपने लोगों को महान् वाचायी आशीष प्रदान करेगा।

4. ओबद्याह (28:17)

समय : शायद 597 से 586 ई.पू. के दौरान बेबीलोन द्वारा यहूदा पर किए गए आक्रमणों और निर्वासनों के दौरान।

स्थान : शायद यहूदा

संदेश :

- ऐदोम राष्ट्र ने यहूदियों के भयानक कष्टों का लाभ उठाया।
- यहोवा एदोमियों की क्रूरता को नजरअंदाज नहीं करेगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. हबक्कूक (29:14)

समय : शायद 605 ई.पू. के बेबीलोन के आक्रमण और निर्वासन के आसपास।

स्थान : यहूदा

संदेश :

- यहूदा के लोगों की बुराई पर विलाप किया।
- बेबीलोन द्वारा किए जाने वाले अत्याचार पर विलाप किया।
- यहोवा में विश्वास की पुष्टि की।

6. यहेजकेल (30:30)

समय : 597 ई.पू. से 586 ई.पू. के यरूशलेम के विनाश के समय तक।

स्थान : बेबीलोन

संदेश :

- बेबीलोनी यरूशलेम और उसके मंदिर का नाश करने वाले हैं।
- लोग पुनः अपनी भूमि पर लौटेंगे और जब वे लौटेंगे तो उन्हें मंदिर का पुनर्निर्माण करना है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. दानिय्येल (31:34)

समय : 605 ई.पू. से 539 ई.पू. तक

स्थान : बेबीलोन

संदेश :

- परमेश्वर के लोगों की बंधुआई चार राज्यों तक चलती रहेगी :
    - बेबीलोनी
    - मादी और फारसी
    - यूनानी
    - रोमी
- बंधुआई में गए लोगों को पश्चाताप और विश्वास करने के लिए उत्साहित किया
- लगातार विद्रोह लोगों को अपनी भूमि से दूर ही रखेगा।

V. पुनर्वास का समय (33:32)

पुनर्वास का यह समय 539 ई.पू. से 400 ई.पू. तक का था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. मुख्य घटनाएँ (34:16)

1. इस्राएलियों का अपनी भूमि पर लौट आना (34:23)

फारसी सम्राट कुस्रू ने :

- बेबीलोनी साम्राज्य पर अधिकार कर लिया।
- इस्राएलियों को उनकी भूमि पर लौट जाने एवं यहोवा के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए उत्साहित किया।

बंधुआई से लौटेने वालों की संख्या बहुत कम थी। वे यहोवा की ईच्छा को पूरा करने के लिए मजबूती से समर्पित नहीं थे।

2. मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाना (35:06)

पहले पहुंचे इस्राएलियों ने मंदिर के निर्माण को नजरअंदाज कर दिया।

520 ई.पू. के लगभग हाग्गै और जकर्याह ने परमेश्वर के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए लोगों को उत्साहित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. व्यापक धर्मपरित्याग (35:43)

जरूब्बाबेल द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण कर लेने के बाद एक ही पीढ़ी के भीतर :

- परमेश्वर के लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह रचाना शुरू कर दिया।

- इसके फलस्वरूप इस्राएल का धर्म दूसरे लोगों के धर्मों के साथ मिल गया।

- पुनर्वास के कार्य में रूकावट आ गई।

B. भविष्यवाणिय सेवकाइयां (36:31)

1. हाग्गै (36:46)

समय : 520 ई.पू.

स्थान : यरूशलेम

संदेश : यदि राष्ट्र यहोवा की ओर लौट आए और मंदिर का पुनर्निर्माण करे तो परमेश्वर लोगों को बड़ी आशीषें देगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. जकर्याह (37:57)

समय : 520 ई.पू.

स्थान : यरूशलेम

संदेश :

- यदि लोग मंदिर का पुनर्निर्माण करें तो बड़ी आशीषें आएंगी।
- संपूर्ण पुनर्वास भयंकर, भावी, दैवीय हस्तक्षेप से ही होगा।

3. मलाकी (39:17)

समय :

- नहेम्याह के सुधारों के दौरान या उनके बाद
- लगभग 450 और 400 ई.पू. के बीच

स्थान : यरूशलेम

संदेश :

- अभी भी एक बड़ा दण्ड परमेश्वर के लोगों के लिए आ रहा है।
- परमेश्वर का दण्ड इस्राएल में धर्मी लोगों के अंतिम पुनर्वास की ओर भी अगुवाई करेगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भविष्यवक्ताओं ने अंत में यही कहा कि बड़े पुनर्वास की आशीषें दूर कहीं भविष्य में आएंगी। अब मसीही होने के नाते हम जानते हैं कि यह तब हुआ जब यीशु इस धरती पर आया।

VI. निष्कर्ष (40:48)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. आरंभिक राजतंत्र की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए।

2. आरंभिक राजतंत्र के दौरान भविष्यवाणिय सेवकाई की विशेषताएं क्या थीं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. असीरियाई तबाही की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए।

4. असीरियाई तबाही के दौरान भविष्यवाणिय सेवकाई की विशेषताएं क्या थीं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. बेबीलोनी तबाही की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए।

6. बेबीलोनी तबाही के दौरान भविष्यवाणिय सेवकाई की विशेषताएं क्या थीं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. पुनर्वास के समय में हुई मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए।

8. पुनर्वास के समय के दौरान भविष्यवाणिय सेवकाई की विशेषताएं क्या थीं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. 2 राजा 18-19 पढ़ें। सन्हेरिब आक्रमण के दौरान राजा हिजकिय्याह ने यहोवा से उसे और उसके लोगों छुड़ाने की विनती की। आपके विचार में परमेश्वर ने राजा हिजकिय्याह के लिए क्यों कार्य किया? परमेश्वर किस प्रकार आज के विश्वासियों को छुड़ाता है जो बड़े-बड़े शत्रुओं का सामना करते हैं?

2. भविष्यवक्ताओं के बीच योना की सेवकाई का स्थान विचित्र था। उसे असीरिया की राजधानी निनवे जाने के लिए कहा गया था। योना की अपेक्षा के विपरीत लोगों ने पश्चाताप किया। सारे राष्ट्रों में परमेश्वर के नाम के विषय में योना की सेवकाई आपको क्या दर्शाती है? आपके शत्रुओं के विषय में योना की सेवकाई आपको क्या दर्शाती है?

3. दण्ड या तबाही के दिनों में भी भविष्यवक्ता यशायाह ने यहोवा पर भरोसे की बात कही। किस प्रकार यशायाह ने अपने श्रोताओं को विश्वास दिलाने का प्रयास किया? यशायाह की रणनीति से आज के मसीही क्या सीख सकते हैं?

4. पुनर्वास के दौरान के भविष्यवक्ताओं ने कहा कि बड़ी आशीषें दूर भविष्य में ही आएंगीं। यह हमें मसीह द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में क्या बताता है? मसीह द्वारा निभाई गई इस भूमिका का ज्ञान किस प्रकार विश्वासियों के साथ और अविश्वासी संसार के साथ हमारे व्यवहार को प्रभावित करना चाहिए?

5. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org